PERSPECTIVE OF SECONDARY SCHOOL STUDENTS ON DIGITAL MEDIA AND INCLUSIVE SEX EDUCATION: AN EMPIRICAL RESEARCH STUDY WITH SPECIAL REFERENCE TO LUCKNOW DISTRICT

डिजिटल मीडिया और समावेशी यौन शिक्षा पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का दृष्टिकोण: लखनऊ ज़िले के विशेष संदर्भ में एक अनुभवजन्य शोध अध्ययन

Tarun Kumar [1], Dr. Mahendra Kumar Padhy [2], Vidya Sagar [3], Ujjwal Kumar [4], Sadhana Subhadarshni [5], Shweta Dubey [6]

[1] Research Scholar, Department of Mass Communication and Journalism, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, A central University, Lucknow, Uttar Pradesh, India
[2] Associate Professor and PhD Guide, Department of Mass Communication and Journalism, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, A central University, Lucknow, Uttar Pradesh, India
[3] Research Scholar, Department of Mass Communication and Journalism, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, A central University, Lucknow, Uttar Pradesh, India
[4] Research Scholar, Department of Mass Communication and Journalism, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, A central University, Lucknow, Uttar Pradesh, India
[5] Research Scholar, Department of Mass Communication and Journalism, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, A central University, Lucknow, Uttar Pradesh, India
[6] Research Scholar, Department of Mass Communication and Journalism, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, A central University, Lucknow, Uttar Pradesh, India

ABSTRACT

English: The study is an attempt to identify the signification of inclusive sex education in the digital age. The secondary school students are still hesitant to talk about sex education. This problem is not a problem of today, but a problem that has been going on for many decades, which remains the same even today. Digital media, which includes social media such as WhatsApp, YouTube, Instagram, Facebook, etc., is used by secondary school students, but the content related to sex education available on it is not able to provide much benefit to the children. Quantitative research methodology using mixed research methodology has been used to obtain and analyze the statistical data using survey method. Two schools have been selected with the help of facility sampling technique in non-probability methodology. The data indicated that there is a correlation between secondary school students' perception on digital media and attitude formation in sex education.

Hindi: डिजिटल युग में समावेशी यौन शिक्षा का महत्व आज के दौर में कितना महत्वपूर्ण और आवश्यक है इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्र आज भी यौन शिक्षा पर बात करने से झिझकते हैं। यह समस्या आज की समस्या नहीं बल्कि कई दशकों से चली आ रही समस्या है जो कि आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। डिजिटल मीडिया जिसमें सोशल मीडिया जैसे व्हाट्सएप्प, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक आदि माध्यमों का प्रयोग माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा किया तो जाता है किंतु उस पर मिलने वाली यौन शिक्षा से जुड़ी सामग्री बहुत ज्यादा लाभ बच्चों को नहीं पहुंचा पा रही है। मिश्रित शोध पद्धति का प्रयोग करते हुए मात्रात्मक शोध पद्धति में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए सांख्यिकीय डेटा को प्राप्त कर उसका विश्लेषण किया गया है। गैर-संभाव्यता पद्धति में सुविधा नमूना करण तकनीक की मदद से 2 विद्यालयों का चयन किया गया है। प्राप्त आंकड़े इस ओर इशारा करते है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के बीच दृष्टिकोण निर्माण में संबंध है।

Received 15 March 2026
Accepted 09 May 2026
Published 21 May 2026

Corresponding Author
Tarun Kumar,
tarunkumar728@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v7.i11s.2026.7917

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify,

How to cite this article (APA): Kumar, T., Padhy, M. K., Sagar, V., Kumar, U., Subhadarshni, S., and Dubey, S. (2026). Perspective of Secondary School Students on Digital Media and Inclusive Sex Education: An Empirical Research Study with Special Reference to Lucknow District. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 7*(11s), 157–175. doi: 10.29121/shodhkosh.v7.i11s.2026.7917

distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

Keywords: Digital Media, Sex Education, Social Media, Secondary School, Attitude Formation, डिजिटल मीडिया, यौन शिक्षा, सोशल मीडिया, माध्यमिक विद्यालय, दृष्टिकोण

1. प्रस्तावना

विविध संस्कृतियों से सुसज्जित भारतीय समाज विश्व में सबसे उच्च श्रेणी के सभ्य समाज की पंक्ति में अपना स्थान रखता है। आधुनिक एवं पश्चिमी विचारधारा को अपनाते हुए विकसित भारत अपनी सभ्यता की सीमा के दायरे में रहते हुए तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। विकास की गति और सभ्यता के समावेश को अपनी दूर दृष्टि से पहचानते हुए भारत के रत्न एवं शिक्षा के प्रतीक कहे जाने वाले डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था, "शिक्षा ही व्यक्ति को निर्भय बनाती है, उसे एकता का पाठ पढ़ाती है, उसे उसके अधिकारों के प्रति जागरूक करती है और उसे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है (Mondal, 2018) ।

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर द्वारा भारतीय संविधान में दिए गए शिक्षा के अधिकार की बदौलत आज देश का प्रत्येक नागरिक बेहतर, समान एवं उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्राप्त कर रहा है। लेकिन आज के दौर में शिक्षा का एक क्षेत्र ऐसा भी है जहां खुलकर पूरी तरह से बातें नहीं हो पाती है। इसके कई कारण अलग-अलग समय पर देखे गए हैं। यह क्षेत्र है यौन शिक्षा का क्षेत्र। यौन शिक्षा भारतीय समाज एवं शिक्षा में एक ऐसा विषय है जिस पर अभी तक भी खुलकर बातें नहीं की जाती है। इसके पीछे कई कारण देखे गए हैं।

आज के आधुनिक दौर में डिजिटल तकनीक का प्रयोग प्रगति के लिए तेजी के साथ किया जा रहा है। यहीं कारण है कि देश की केंद्र सरकार ने भी “डिजिटल इंडिया” नाम से एक मुहिम को चलाया हुआ है। इसी डिजिटल मुहिम का प्रयोग आज की युवा पीढ़ी तेजी के साथ कर रही है। उनकी धारणा डिजिटल मीडिया के प्रति देखने को मिलती है। इसी प्रकार यौन शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण का निर्माण हो रहा है। लेकिन यह दृष्टिकोण किस दिशा में है यह अभी तक पूरी तरह से साफ नहीं है। इन दोनों का समावेश आज युवा पीढ़ी को एक अलग आयाम प्रदान करने में मदद कर रहा है। यह आयाम युवा पीढ़ी को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है यह एक विचारणीय प्रश्न है।

युवा पीढ़ी यौन शिक्षा के प्रति कितनी सजग है? वह यौन शिक्षा को प्राप्त करने के लिए किन माध्यमों एवं स्रोतों पर निर्भर है? विद्यालय में विद्यार्थी यौन शिक्षा पर सहज रूप से अपने विचार साझा करने में कितने सहज है? क्या डिजिटल माध्यम जैसे फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम और व्हाटस्एप्प आदि का प्रयोग यौन शिक्षा प्राप्त करने के लिए करते हैं? डिजिटल मीडिया के प्रति युवाओं की धारणा एवं दृष्टिकोण क्या है? माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों का यौन शिक्षा के प्रति क्या धारणा है एवं उसके प्रति युवाओं का दृष्टिकोण निर्माण कब कैसे और किसके द्वारा हो रहा है? जैसे तमाम महत्वपूर्ण सवालों के जवाब शोध विषय को गहराई से समझने में मदद प्रदान करेंगे।

इसके साथ-साथ शोध विषय में प्रयुक्त शब्दावली जैसे- डिजिटल मीडिया, यौन शिक्षा, माध्यमिक अध्ययन रत छात्र, यौन, शिक्षा को जानना अति आवश्यक है। सर्वप्रथम डिजिटल मीडिया क्या है? इसका जन्म एवं भारत में इतिहास और परिभाषा पर नजर डालते हैं। डिजिटल मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिस पर डिजिटल रूप में सामग्री उपलब्ध है जिसे इंटरनेट अथवा कंप्यूटर नेटवर्क पर प्रसारित किया जा सकता है। इसमें टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो और ग्राफिक्स शामिल हो सकते हैं। (Sikarwar, 2016)

डिजिटलकरण कोई शुरुआत नई शुरूआत नहीं है। मशीनों द्वारा कोड और जानकारी की अवधारणा सबसे पहले चार्ल्स बैबेज ने 1800 के दशक में की थी। बैबेज ने कल्पना की कि ये कोड उन्हें अपने मोटर ऑफ डिफरेंस और एनालिटिकल इंजन के लिए निर्देश देंगे, जिन मशीनों को बैबेज ने गणना में त्रुटि की समस्या को हल करने के लिए डिज़ाइन किया था। इसके बाद 1822 और 1823 के बीच,गणितज्ञ एडा लवलेसबैबेज ने इंजन पर संख्याओं की गणना के लिए पहला निर्देश लिखा। यह वो पहला कदम था जहां से डिजिटल अवधारणा का सपना देखा गया। किंतु सही मायने में पहला डिजिटल मीडिया डिजिटल कंप्यूटर के अस्तित्व के साथ सामने आया। डिजिटल कंप्यूटर बाइनरी कोड और बूलियन तर्क को जानकारी संग्रहीत और संसाधित करने के लिए प्रयोग करता है। इसके अलावा वह मशीन को कॉन्फ़िगरेशन के लिए एक साथ कई अलग-अलग कार्यों को करने की अनुमति देता है। स्वतंत्र रूप से पहली बार आधुनिक प्रोग्राम करने योग्य डिजिटल कंप्यूटर, मैनचेस्टर मार्क1 और ईडीएसएसी को वर्ष 1948 और 1949 के बीच आविष्कार किए गए थे। (wikipedia, 2024)

भारत में डिजिटलीकरण के रूप में ब्रिटिश निर्मित एचईसी 2 एम कंप्यूटर, भारत का पहला डिजिटल कंप्यूटर था, जिसे आयात किया गया था जिसे भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता में वर्ष 1955 में स्थापित किया गया था। इससे पहले, इस संस्थान ने वर्ष 1953 में एक छोटा सा एनालॉग कंप्यूटर विकसित किया था, जो तकनीकी रूप से भारत का पहला कंप्यूटर है। (wikipedia, en.wikipedia.org, 2024)

डिजिटलीकरण में इंटरनेट सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। जिसकी उत्पत्ति 1950 के दशक में हुई। जब दुनिया शीत युद्ध से जूझ रही थी। इसी दौरान सूचनाओं को सुरक्षित एवं तेजी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने के लिए शोधकर्ताओं ने एक संचार प्रणाली बनाने की मांग की जो व्यवधानों का सामना कर सके। (jaygala, 2024)

पारंपरिक मीडिया के उलट डिजिटल मीडिया को डिजिटल डेटा के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, इसमें सिर्फ दो वर्गों 0 और 1 का प्रयोग भाषा के रूप में किया जाता है। ऑडियो, वीडियो, सोशल मीडिया, विज्ञापन, स्मार्टफोन और अन्य डिजिटल मीडिया के उदाहरण माने जाते हैं। (maryville, 2020)

डिजिटल दौर में आज के युवा डिजिटल माध्यमों का प्रयोग बड़ी ही सहजता के साथ करते हैं। इन युवाओं की संख्या दुनिया भर में करोड़ों में है। किंतु शोध विषय में वर्णित किए गए माध्यमिक विद्यालय के छात्र कौन हैं इस पर भी नजर डालना अति आवश्यक है। NEP 2020 के अनुसार माध्यमिक चरण को दो चरणों में बांटा गया है। जिसमें प्रथम चरण में ग्रेड 9-12, यानी, पहले में 9 और 10 और दूसरे में 11 और 12, 14-18 वर्ष की आयु को कवर करते हैं। (MHRD, 2020)

यौन जिसे अंग्रेजी में सेक्स शब्द से वर्णित किया जाता है उसके लिए अलग-अलग संस्थाओं ने अपनी परिभाषा में परिभाषित किया है। एसईआरसी ने यौन को एक गतिविधि के रूप में परिभाषित करते हुए बताया है कि यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें एक, दो, या अधिक लोग खुद को या एक दूसरे को उत्तेजित करने के लिए शब्दों या स्पर्श का उपयोग करते हैं। (एसईआरसी, 2024) । मनुष्यों के अलावा दूसरी प्रजातियों में भी लिंग जैविक विशेषताओं के एक सेट को संदर्भित करता है। यह मुख्य रूप से गुणसूत्रों, जीन अभिव्यक्ति, हार्मोन के स्तर और कार्य के अलावा प्रजनन एवं शरीर रचना विज्ञान सहित शारीरिक और शारीरिक विशेषताओं से जुड़ा हुआ है (CIHR, 2023)। यौन आमतौर पर जैविक सेक्स की विशेषताओं और लक्षणों को संदर्भित करता है। इतना ही नहीं कामुकता में यौन व्यवहार के सभी पहलुओं को इसमे शामिल किया गया है, जिसमें लिंग पहचान, अभिविन्यास, दृष्टिकोण और गतिविधि शामिल हैं (Association, 2024)। डब्ल्यूएचओ के अनुसार यौन "पुरुषों और महिलाओं की विभिन्न जैविक और शारीरिक विशेषताएं, जैसे प्रजनन अंग, गुणसूत्र, हार्मोन, आदि को शामिल करता है (WHO, 2024)।

इसी कड़ी में शिक्षा को परिभाषित करते हुए बड़े-बड़े विद्वानों ने अपने शब्दों में उकेरा है। शिक्षा क्या है इस पर प्रकाश डालना भी शोध विषय के लिए अति आवश्यक है।

1) दुर्खीम के अनुसार शिक्षा युवा पीढ़ी के समाजीकरण के रूप में कार्य करती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो देखने, महसूस करने और अभिनय करने के तरीकों को बालकों पर लागू करने का निरंतर प्रयास है जिसके पास वह अनायास नहीं पहुंच सकता। (Indira, 2018)
2) एफ.जे.ब्राउन और जे.एस. रूसेक के शब्दों में "शिक्षा अनुभव का कुल योग है जो दृष्टिकोण को ढालता है और बच्चे और वयस्क दोनों के आचरण को निर्धारित करता है। (Aman Verma, 2023)
3) महात्मा गांधी ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए अपने समाचार पत्र में कहा है कि ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा से सर्वांगीण शिक्षा से है। " (पृष्ठ 197) (Gandhi, 1937)
4) रवींद्रनाथ टैगोर ने भी अपने शब्दों में शिक्षा को मस्तिष्क को अंतिम सत्य का पता लगाने में सक्षम बनाने वाली प्रक्रिया बताया है, जो मनुष्य को आंतरिक प्रकाश और प्रेम का धन और जीवन को महत्व देती है। (Sridevi, 2022)
5) डॉ. जाकिर हुसैन ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''शिक्षा व्यक्तिगत मस्तिष्क की प्रक्रिया है, जो अपने पूर्ण संभव विकास की ओर अग्रसर होती है। (Aggarwal, 2017)
6) स्वामी विवेकानंद के अनुसार "शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद दिव्य पूर्णता की अभिव्यक्ति है। (VivekaVani, 2011)
7) अरस्तू के अनुसार "शिक्षा एक स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन की रचना है। (eduhutch, 2021)
8) हरबर्ट स्पेंसर ने शिक्षा को "शिक्षा पूर्ण जीवन" बताया है।
9) प्लेटो ने शिक्षा को समय पर सुख और दर्द को महसूस करने की क्षमता में परिभाषित किया है।
10) जॉन डेवी ने कहा है कि "शिक्षा अनुभवों के निरंतर पुनर्निर्माण के माध्यम से जीने की प्रक्रिया है। (Dwivedi, 2024)

यौन एवं शिक्षा को खंड-खंड रूप में जानने के बाद उसका एक नया रूप उभर कर सामने आता है। यह शिक्षा और यौन को मिलकर बना है जिसे यौन शिक्षा के रूप में प्रेषित किया जाता है। इस नए रूप को भी कई विद्वानों ने परिभाषित करते हुए इस पर प्रकाश डाला है। जॉन ओ ओडो एवं मैरीरोज उंटेगबुलू ने अपने शोध पत्र में अलग-अलग विद्वानों द्वारा दी गई यौन शिक्षा की परिभाषा को सम्मिलित किया है। बार्न्स (2014) के अनुसार, यौन शिक्षा को संरचना और कार्य में शारीरिक अंतर के शिक्षण और सीखने के रूप में वर्णित किया गया है जो पुरुष को उनकी यौन प्रवृत्ति, इच्छाओं आदि या संभोग में उनकी अभिव्यक्ति में महिला से अलग करता है। वहीं दूसरी ओर बर्गेल (2015) ने यौन शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि कुछ लोग

सोचते हैं कि यौन शिक्षा एक अनैतिक कार्य है। चेरटेफ़र (2012) के अनुसार यौन शिक्षा को अच्छी व्यक्तिगत सेक्स आदतों के बारे में जानकारी प्रदान करने और दोनों लिंगों के सदस्यों के साथ स्वस्थ संबंधों को बढ़ावा देने के कार्य के रूप में देखा है। कटराइट (2013) ने यौन शिक्षा को एक स्कूल द्वारा कार्रवाई के एक व्यापक कार्यक्रम के रूप में परिभाषित किया है, जिसका उद्देश्य बच्चों और वयस्कों की ओर से सामाजिक रूप से वांछनीय यौन दृष्टिकोण, प्रथाओं और व्यक्तिगत आचरण को लाना है जो एक इंसान के रूप में व्यक्ति और परिवार को एक सामाजिक संस्था के रूप में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित करेगा (john o odo, 2023)।

2. साहित्य अवलोकन

प्रस्तुत शोध विषय को गहराई से समझने एवं विषय की विषय वस्तु पर पकड़ बनाने हेतु अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध पत्रों का अध्ययन किया गया है। इसके अलावा इंटरनेट पर विभिन्न वेबसाइट, ब्लॉग, डॉक्यूमेंट, पुस्तकों आदि का अध्ययन किया गया है। जिनका विवरण निम्नवत है-

अर्चना शर्मा ने अपने शोध विषय रोल ऑफ मास मीडिया टूल्स टू एज्यूकेट स्कूल चिल्डर्न्स एबॉउट चाइल्ड एब्यूस ए स्टडी ऑफ स्टूडेंट इन चंडीगढ में बताया कि वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मीडिया कुछ हद तक उत्तरदाताओं के बीच सीएसए और पोक्सो अधिनियम के बारे में जागरूकता पैदा करता है। (शर्मा, 2022)।

Sebastian, Joseph ने अपने शोध विषय सेक्स एजूकेशन इन स्कूल ए स्टडी ऑन द एटीट्यूड ऑफ पेरेंट्स टीचर्स एंड स्टूडेंट के निष्कर्ष में बताया कि स्कूलों में यौन शिक्षा को शामिल करने एवं शिक्षकों के प्रति माता-पिता का रवैया मध्यम रूप से सकारात्मक है। (sebastian, 2000)।

जगदीश ने अपनी शोध ए स्टडी ऑन द नॉलेज एंड एटीट्यूड ऑफ पेरेंट्स टीचर्स एंड स्टूडेंट ऑन सेक्स एजुकेशन इन सेकेंड्री स्कूल इन कर्नाटक में यह बताया कि शिक्षकों को यौन शिक्षा पर अच्छा ज्ञान है और उनके द्वारा सुझाई गई यौन शिक्षा सामग्री को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है। शिक्षकों के पढ़ाने के तौर तरीकों को स्कूल पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में शामिल करना चाहिए। लेकिन चौंकाने वाली बात यह है कि रिश्तों, मूल्यों, दृष्टिकोण और कौशल, संस्कृति, समाज और मानवाधिकारों, मानव विकास, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर छात्रों का ज्ञान कम है। (jagadish, 2013)।

यूनेस्को ने अपनी रिपोर्ट “दे जर्नी टुवर्ड्स कॉम्प्रिहेंसिव सेक्सुअलिटी एजुकेशन: ग्लोबल स्टेटस रिपोर्ट” में बताया है कि भारत में वर्ष 2016 से एक मात्र “उड़ान इज़ अ स्कूल-बेस्ड एडोलेसेंट एजुकेशन प्रोग्राम” चलाया जा रहा है। भारत में, यौन शिक्षा की जिम्मेदारी को राज्य स्तर पर विकेन्द्रित किया गया है। (unesco, 2021)।

एलिया गबारोन और रॉल्फ विन्न द्वारा लिखित शोधपत्र यूज़ ऑफ सोशल मीडिया फॉर सेक्सुअल हेल्थ प्रमोशन: ए स्कोपिंग रिव्यू में बताते हैं कि किए गए शोध में 51 ऐसे प्रकाशन हैं जो यौन स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया के उपयोग पर जोर देते हैं। वहीं दूसरी ओर यौन स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया हस्तक्षेपों के सकारात्मक प्रभावों के प्रमाण लगातार बढ़ रहे हैं (Wynn, 2016)।

समुदायों की यौन स्वास्थ्य आवश्यकताओं का प्रभावी रूप से प्रत्युत्तर देने के लिए यह अनिवार्य है कि प्रैक्टिशनर्स न केवल प्रत्यक्ष रूप से, बल्कि डिजिटल माध्यमों पर भी समुदायों की अभिव्यक्तियों और अनुभवों को सुनें। इस संदर्भ में यह लेख एक प्रारंभिक विश्लेषण के रूप में प्रस्तुत है, जिसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि सोशल मीडिया किस प्रकार सामाजिक और शैक्षिक शक्ति का स्थान रखता है तथा यौन शिक्षा के क्षेत्र में इसे किन रूपों में प्रयुक्त किया जा रहा है। (et.all, 2018)।

ज़ाई डाइवाचा एवं अन्य ने अपने शोधपत्र ट्वीटिंग अबाउट टेस्टिंग: डू लो-इन्कम, पेरेंटिंग एडोलसेंट्स ऐंड यंग अडल्ट्स यूज़ न्यू मीडिया टेक्नोलॉजीज़ टू कम्यूनिकेट अबाउट सेक्सुअल हेल्थ? शोध निष्कर्ष इस बात की ओर भी इशारा करते है कि यौन स्वास्थ्य से संबंधित व्यवहारों और मानदंडों में बदलाव लाने के लिए सोशल नेटवर्किंग साइटें आदर्श मंच प्रतीत नहीं हो सकतीं (Zai Divecha, 2012)।

लाइने एम ब्रेबॉय एवं अन्य ने अपने शोध पत्र गर्ल टॉक: ए स्मार्टफोन एप्लिकेशन टू टीच सेक्सुअल हेल्थ एजुकेशन टू एडोलसेंट गर्ल्स में बताते हैं कि गर्ल्स टॉक (ऐप्लिकेशन) पुराने तरीकों की तुलना में किशोर लड़कियों को यौन स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी से जोड़ने की क्षमता रखता है। (Lynae M Brayboy 1, 2017)।

3. शोध अंतराल

उपरोक्त राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रों के अवलोकन के बाद शोध अंतराल के रूप में निम्न बातें सामने आती है। डिजिटल मीडिया का प्रयोग हुआ तो है किंतु विशेष तौर पर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के बीच दृष्टिकोण निर्माण को केंद्र में रख कर सीमित हुआ है। इसके अलावा डिजिटल मीडिया में सोशल नेटवर्किंग साइट्स जैसे- फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचेट, यूट्यूब और व्हाटस्एप्प को भी केंद्र में रख कर शोध नहीं की गई है। पहले की शोधों में स्कूलों में यौन शिक्षा और डिजिटल या सोशल मीडिया द्वारा स्वास्थ्य जानकारी प्रदान की गई

है किंतु दोनों की तुलना नहीं की गई है। भौगोलिक अंतराल के रूप में लखनऊ या उत्तर प्रदेश के शहरी अथवा अर्ध शहरी संदर्भ में डिजिटल मीडिया और यौन शिक्षा पर माध्यमिक स्तर पर छोत्रों की धारणा से संबंधित प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं मिलता है।

4. शोध का महत्व

भारत देश में शिक्षा को हमेशा से मानव विकास के लिए सबसे ऊपर रखा गया है। शिक्षा को मानव विकास, देश विकास के साथ-साथ समाज के विकास के लिए भी सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षा के महत्व को बताते हुए डॉ. भीमराव अंबेडकर ने शिक्षा को सामाजिक समरसता एवं मानवीय सदगुणों को विकसित करने वाली बताया। बाबा साहेब के अनुसार मनुष्य के जीवन में श्रेष्ठ एवं उच्च शिक्षा वहीं है जो ने केवल मनुष्य को साक्षर बनाएं बल्कि उसका मानसिक विकास भी करें, उसके आत्माभिमान और विवेक को भी जाग्रत करें (mahto, 2021)। माध्यमिक छात्रों के बीच इसी जाग्रति और विकास क्रम को पहचानना, वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ आने वाली पीढ़ी के लिए बेहद ही आवश्यक है। शोध के निष्कर्ष युवा पीढ़ी को यौन शिक्षा, डिजिटल मीडिया के प्रति उनकी धारणा के साथ-साथ उनके दृष्टिकोण को जानकर वर्तमान और भविष्य में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी। इसके अलावा शोध से संबंधित व्यक्तियों एवं संस्थानों को भी एक ऐसी नई दिशा प्रदान करेंगी जिसकी मदद से वह आने वाले समय में युवा पीढ़ी के लिए एक बेहतर और उनके अनुरूप ही नई नीति का निर्माण कर सकें। सरकार भी शोध परिणामों का प्रयोग कर शिक्षा क्षेत्र में एक नया अध्याय जोड़ कर यौन शिक्षा को अधिक सजग एवं सरल रूप से पाठ्यक्रम तैयार कर उसे सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक रूप से लागू करने के लिए लचीली और प्रभावी नीति तैयार कर पाएगी।

5. शोध उद्देश्य

1) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया की आदतों का अध्ययन करना।
2) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच यौन शिक्षा के प्रति विद्यमान दृष्टिकोण एवं धारणाओं का अध्ययन करना।
3) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के द्वारा डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
4) डिजिटल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री का छात्रों के शिक्षा की समझ और यौन अधिकारों पर पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना।
5) माध्यमिक विद्यालय में छात्रों के यौन शिक्षा के संदर्भ में दृष्टिकोण निर्माण में आने वाली सामाजिक और डिजिटल बाधाओं का अध्ययन करना।

6. शोध समस्या

शोध समस्या के रूप में डिजिटल मीडिया के प्रति माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की धारणा और यौन शिक्षा पर दृष्टिकोण उनके निर्माण का पता करना है। जो आज से नहीं बल्कि लंबे समय से चलती हुई आ रही है। विद्यालय में यौन शिक्षा के विषय को पढ़ाने के लिए अनुकूल वातावरण का अभाव पीढ़ी दर पीढ़ी देखा और अनुभव किया गया है। कुछ ऐसा ही अभाव शिक्षा नीति में भी देखने का मिलता है। जिसमें यौन शिक्षा को शामिल करने की पूर्ण कोशिश नजरअंदाज नजर आती है। यह समस्या आज इतनी विशाल बन चुकी है कि युवा अवस्था में ही अलग-अलग तरह के प्रभाव बच्चों पर देखने को मिलते हैं। इतना ही नहीं भारत जैसे देश में जाति एवं लिंग के आधार पर भी यौन शिक्षा तक पहुंच में बाधाएं देखी जाती है। शिक्षा की गुणवत्ता और सामग्री को लेकर भी समस्याएं सामने आती रही है। जानकारी की कमी और गलत स्रोत के साथ-साथ इस विषय पर चर्चा और उसकी स्वीकृति में भी एक बड़ी समस्या है।

7. शोध परिकल्पना

एच0- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के बीच दृष्टिकोण निर्माण में कोई संबंध नहीं है।

एच1- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के बीच दृष्टिकोण निर्माण में संबंध है।

8. सैद्धांतिक ढांचा

प्रस्तुत शोध के लिए अल्बर्ट बैंडुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत सबसे अधिक सटीक बैठता है। ऐसा इसलिए क्योंकि यह अधिगम यह स्पष्ट करता है कि युवा अवस्था में व्यक्ति अपने आस-पास के वातावरण एवं माध्यमों के व्यवहार का अवलोकन करके सीखता है। इसी के संदर्भ में, वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर, ऑनलाइन शिक्षक, यूट्यूब चैनल आदि सहकर्मी समूह ऐसे ही मॉडल के रूप में काम करते हैं जो वर्तमान में माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं को किसी ना किसी रूप में प्रभावित करते हैं। अत: कहा जा सकता है कि डिजिटल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री छात्रों के दृष्टिकोण निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

चित्र.1

शोध में प्रयुक्त तत्व	सामाजिक अधिगम सिद्धांत से संबंध
डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा -----------	ऑनलाइन सामग्री को देखकर धारणा का बनना
दृष्टिकोण का निर्माण -----------------------	बार-बार देखने और सुनने से दृष्टिकोण का विकसित होना
माध्यमिक स्तर के छात्र --------------------	इस उम्र में प्रभाव का जल्दी होना
यौन शिक्षा ------------------------------------	देखने और सुनने से जल्दी सीखना

चित्र 1 शोध से संबंधित तत्वों का अधिगम का संबंध

9. अनुसंधान पद्धति

शोध विषय डिजिटल मीडिया और समावेशी यौन शिक्षा पर माध्यमिक विद्यालय छात्रों का दृष्टिकोण : लखनऊ के विशेष संदर्भ में एक अनुभवजन्य अनुसंधान, के लिए प्रयोग की जाने वाली शोध पद्धति का निर्धारण निम्न प्रकार से किया गया है।

मिश्रित शोध पद्धति में मात्रात्मक दृष्टिकोण को प्रयोग किया गया है। मात्रात्मक शोध पद्धति में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए सांख्यिकीय डेटा का विश्लेषण किया गया है। शोध का ब्रह्मांड उत्तर प्रदेश राज्य की वर्तमान राजधानी लखनऊ है। अध्ययन की जनसंख्या जनपद लखनऊ में संचालित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन रत सभी विद्यार्थी है। अध्ययन के नमूना स्कूल में पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं है। मिश्रण नमूना तकनीक में संभाव्यता तकनीक का प्रयोग करते हुए स्तरीकृत प्रति चयन तकनीक का प्रयोग किया गया है। इसके उपरांत यादृच्छिक प्रति चयन तकनीक की सहायता से पहले नमने का चयन किया गया है। आगे कि प्रक्रिया में काम करते हुए व्यवस्थित यादृच्छिक प्रति चयन सूत्र $k = N/n$ से प्राप्त संख्या के अनुक्रम का पालन करते हुए आगे के नमूनों का चयन किया गया है। नमूनों का चयन (उसी अनुपात में किया गया है जिस अनुपात में महिला/पुरुष छात्र है। डेटा एकत्रित करने वाले दिन उपस्थित छात्रों में से) कक्षा 8 से कक्षा 9 में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं से किया गया है। स्कूलों से चयनित नमूनों की कुल संख्या 100 है।

गैर-संभाव्यता पद्धति में सुविधा नमूना करण तकनीक की मदद से 2 विद्यालयों का चयन किया गया है। जिसमें सीबीएससी से मान्यता प्राप्त संबंध प्राइवेट स्कूल एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित को चुना गया है। प्राथमिक डेटा के संग्रहण के लिए प्रश्नावली अनुसूची का प्रयोग उपकरण के तौर पर किया गया है। डेटा की व्याख्या और स्पष्टीकरण के लिए पाई चार्ट, ग्राफ और तालिका की सहायता ली गई है।

10. शोध नमूनों में शामिल होने वाले नमूने का विवरण (SAMPLING PROFILE)

1	लिंग	पुरुष, महिला, अन्य।
2	शैक्षिक स्तर	माध्यमिक।
3	सामाजिक-आर्थिक स्थिति(आय स्तर)	निम्न, मध्यम, उच्च वर्ग।
4	डिजिटल उपयोग प्रोफाइल	सक्रिय उपयोगकर्ता (दैनिक/साप्ताहिक)।
5	प्लेटफॉर्म विविधता	व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम उपयोगकर्ता।

6	पेशा	छात्र।

11. शोध के चर

स्वतंत्र चर- डिजिटल मीडिया। (इसका प्रभाव दृष्टिकोण पर देखा जाएगा।)

आश्रित चर- छात्रों का दृष्टिकोण। (यह वह परिणाम है जिसे मापा जा रहा है।)

12. अध्ययन की सीमा

शोध से प्राप्त निष्कर्षों को सभी प्राइवेट एवं राज्य सरकारी स्कूलों पर लागू नहीं किया जा सकता। क्योंकि शोध में स्कूल नमूनों का चयन सुविधा नमूना तकनीक की सहायता से किया गया है। इसके अलावा शोध में कक्षा 8 से कक्षा 9 तक के छात्र-छात्राओं की ही शामिल किया गया है। 10वीं, 11वीं एवं 12वीं कक्षा के छात्र-छात्राओं की अनदेखी की गई है। किसी अन्य शोध विषय विशेषज्ञ के रूप उनके विचारों को शामिल नहीं किया गया है। भौगोलिक भेद के आधार पर अध्ययन लखनऊ में ही की गई है।

13. डेटा सरलीकरण एवं विश्लेषण

प्रश्नावली में शामिल होने वाले छात्र-छात्राओं का विवरण(चित्र.01)-

कक्षा 8 के छात्र- लड़के-- 19 लड़कियां-- 23 कुल— 42

कक्षा 9 के छात्र- लड़के-- 32 लड़कियां-- 26 कुल— 58

चित्र 2

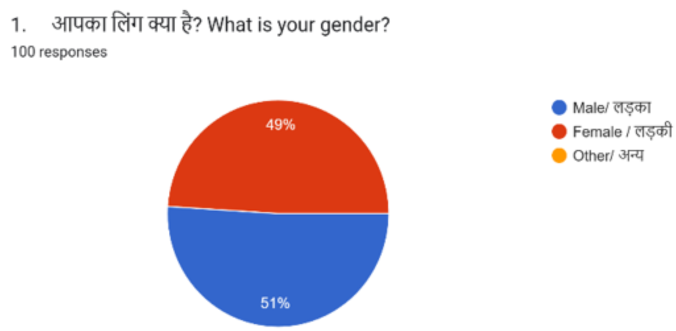

चित्र 2 छात्र-छात्राओं का विवरण

46 बच्चे ऐसे हैं जो 1-3 घंटे तक रोजाना डिजिटल मीडिया (मोबाइल/इंटरनेट/सोशल मीडिया) पर समय बिताते हैं। जबकि 37 बच्चे 1 घंटे से कम रोजाना अपना समय डिजिटल मीडिया को देते हैं। जहां 3-5 घंटे तक डिजिटल मीडिया पर समय व्यतीत करने वाले बच्चों की संख्या 14 हैं वहीं 3 बच्चें ऐसे हैं जो 5 घंटे से अधिक का समय डिजिटल मीडिया पर बिताते हैं।(चित्र.02 का विवरण)

चित्र 3

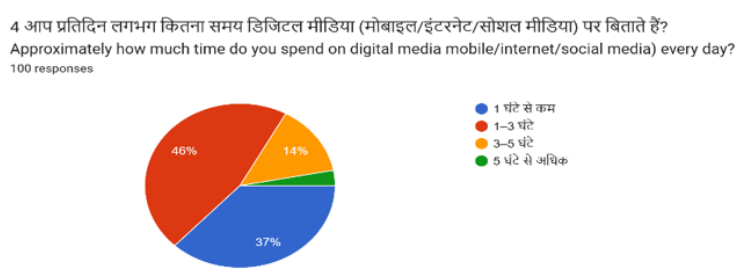

चित्र 3 डिजिटल मीडिया पर समय

इन 100 छात्र-छात्राओं में 65 बच्चे यूट्यूब को सबसे अधिक प्रयोग करते हैं। वहीं 17 बच्चें इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप्प, गूगल और अन्य माध्यमों को प्रयोग करने वाले छात्रों की संख्या प्रत्येक में 6 है।(चित्र.03 का विवरण)

चित्र 4

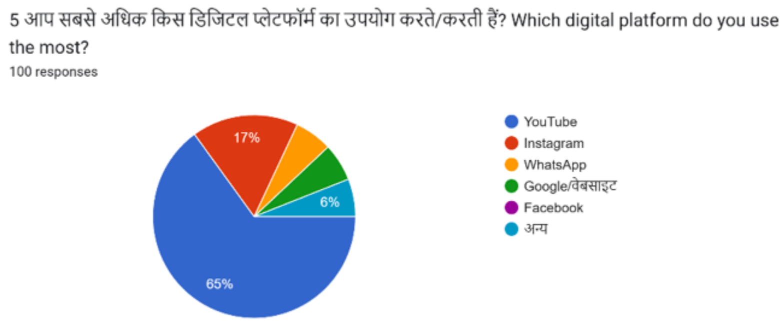

चित्र 4 डिजिटलमीडिया प्लेटफॉर्म प्रयोग

74 बच्चों का कहना है कि वो डिजिटल मीडिया का प्रयोग पढ़ाई/जानकारी के लिए, मनोरंजन के लिए, दोस्तों से बात करने के लिए करते हैं, जबकि कुछ ऐसे भी है जो इनमें से सिर्फ किसी एक लिए प्रयोग करते हैं। (चित्र.04 का विवरण)

चित्र 5

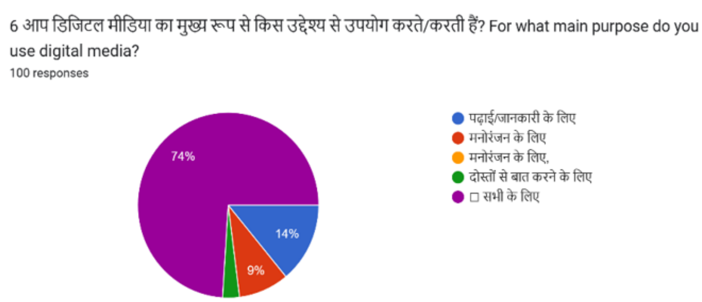

चित्र 5 मीडिया प्रयोग का मुख्य उद्देश्य)

जहां एक ओर 73 बच्चे इस बात का समर्थन करते है कि स्कूलों में यौन शिक्षा प्रभावी रूप से दी जानी चाहिए वहीं दूसरी ओर सिर्फ 29 बच्चे ही ऐसे हैं जो इस बात से सहज की वह यौन शिक्षा के विषय पर बात कर सकते हैं। लेकिन 61 बच्चे इस विषय पर बात करने में थोड़ा असहज महसूस करते हैं। जबकि 10 तो बहुत असहज है। (चित्र.05 का विवरण)

चित्र 6

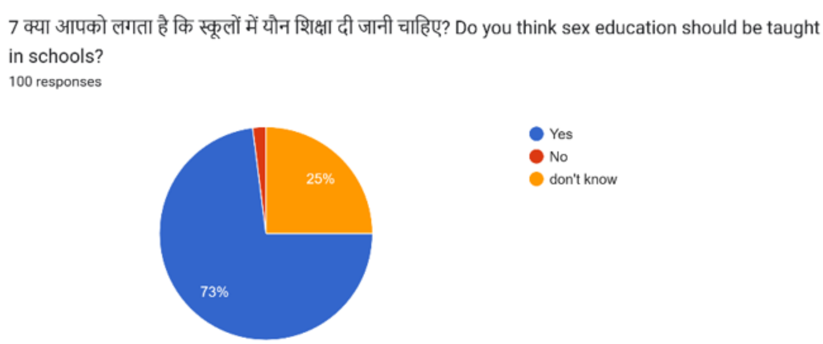

चित्र 6 यौन शिक्षा

बच्चे यौन शिक्षा की जानकारी सबसे अधिक कहां से प्राप्त करते हैं वह कुछ इस प्रकार है- स्कूल/ शिक्षक से- 32, डिजिटल मीडिया से- 30, दोस्तों से- 23, माता-पिता से- 10 और किसी अन्य माध्य से प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या-5 है। (चित्र.06 का विवरण)

चित्र 7

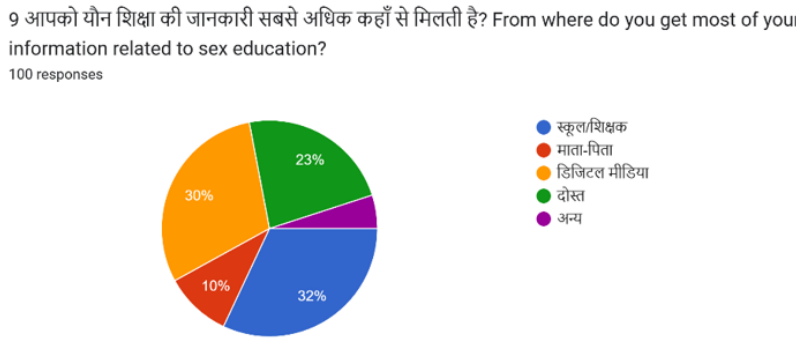

चित्र 7 यौन शिक्षा का माध्यम

54 बच्चे का कहना है कि यौन शिक्षा जैसे विषय पर समाज में खुल कर बातें नहीं होती है, जबकि 42 बच्चे इस ओर इशारा करते हैं कि बहुत की कम स्तर पर ऐसी बातें होती है।(चित्र.07 का विवरण)

चित्र 8

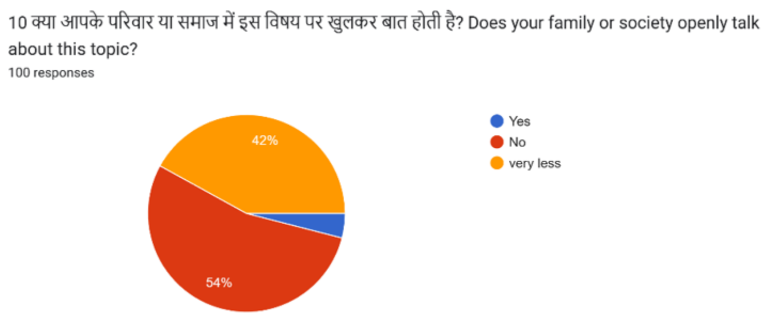

चित्र 8 परिवार या समाज में बातें

72 बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने कभी इंटरनेट या सोशल मीडिया पर शरीर, किशोरावस्था (puberty), संबंध या सुरक्षा से जुड़ी कोई जानकारी देखी/पढ़ी है जबकि 28 ऐसे हैं जिन्होंने ऐसा कभी नहीं किया। (चित्र.08 का विवरण)

चित्र 9

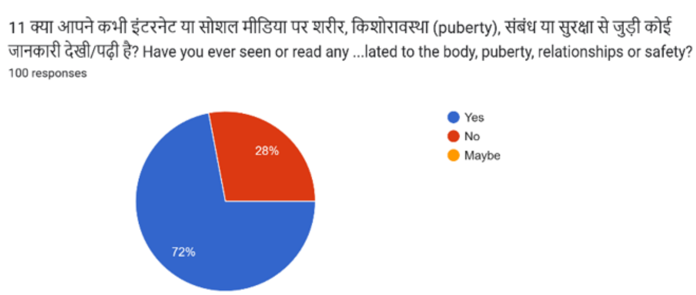

चित्र 9 सोशल मीडिया पर जानकारी

यौन शिक्षा जैसे विषय पर किसी प्रकार के सवाल का जवाब बच्चे डिजिटल मीडिया पर ढूंढते हैं जिनका प्रतिशत 53 है। वहीं अन्य माध्यमों जैसे माता-पिता, दोस्तों, किताबें, शिक्षक को वह उतना सहज नहीं मानते। कुछ (यानि 5) तो ऐसे भी है जो अपने सवालों के जवाब किसी से भी नहीं पूछना चाहते। (चित्र.09 का विवरण)

चित्र 10

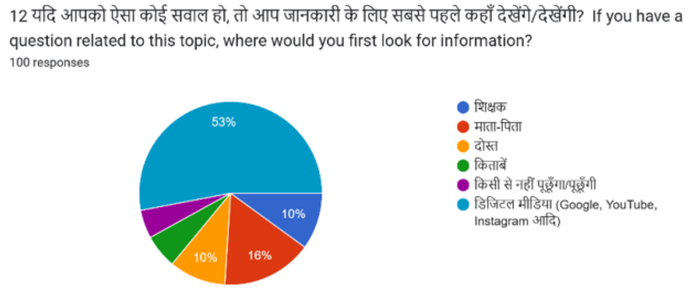

चित्र 10 जानकारी ग्रहण करने का माध्यम

31 बच्चों का कहना है कि डिजिटल मीडिया पर उपलब्ध जानकारी से उनकी यौन शिक्षा से जुड़ी समझ पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता। वहीं 26 को इस बात का पता ही नहीं है कि कोई प्रभाव पड़ता भी है या नहीं। जबकि 25 का कहना है कि हाँ, सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। 18 बच्चे कहते हैं कि हाँ, नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।(चित्र.10 का विवरण)

चित्र.11

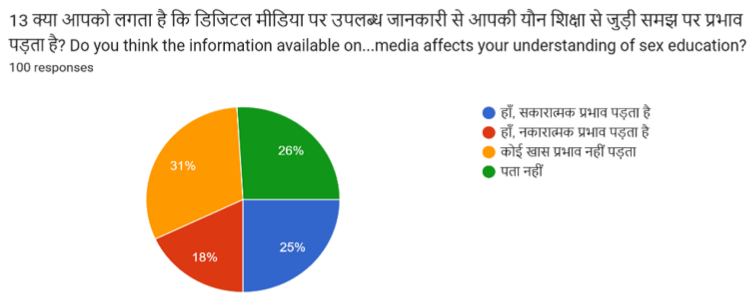

चित्र 11 समझ पर प्रभाव

53 छात्र-छात्राएं इस बात से कुछ सहमती रखते हैं कि डिजिटल मीडिया उनकी सोच और दृष्टिकोण को यौन शिक्षा के विषय में प्रभावित करता है। 33 इस बात से सहमत नहीं है। सिर्फ 12 बच्चे ऐसे हैं जो पूरी तरह से खुद को इस बात से सहमत पाते हैं।(चित्र.11 का विवरण)

चित्र 12

चित्र 12 सोच और दृष्टिकोण)

यौन शिक्षा से जुड़ा कंटेंट ऑनलाइन देखने पर 51 छात्र-छात्राओं के मन में कैसा भाव आता है इस बात का उत्तर उन्होंने देते हुए बताया कि कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता। जबकि 28 का कहना है कि जागरूकता बढ़ती है। 13 के मन में भ्रम पैदा हुआ और 8 को डर लगा।(चित्र.12 का विवरण)

चित्र 13

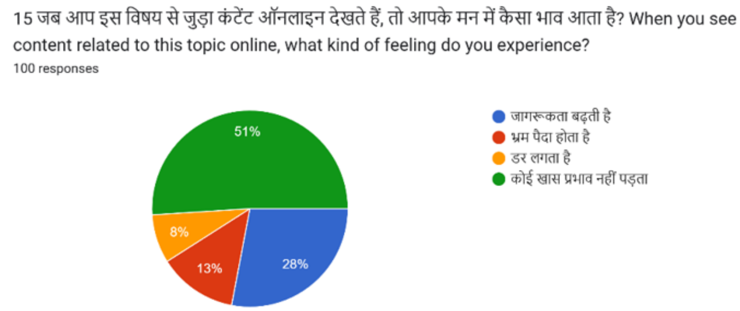

चित्र 13 मन के भाव

40 बच्चों का कहना है कि डिजिटल मीडिया से उनको यौन शिक्षा संबंधित सही जानकारी का लाभ प्राप्त हुआ। 32 ने इस ओर इशारा किया कि उन्हें कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ। 24 का कहना था कि उन्हें जागरूकता प्राप्त हुई और 4 को आत्मविश्वास प्राप्त हुआ।(चित्र.13 का विवरण)

चित्र 14

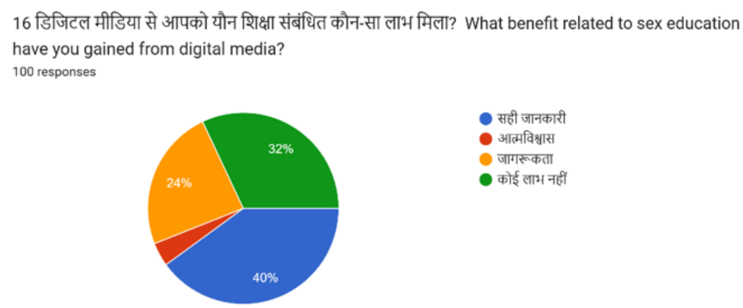

चित्र 14 यौन शिक्षा संबंधित लाभ

44 छात्र-छात्राओं ने साफ तौर पर कहा कि डिजिटल मीडिया पर उन्होंने ऐसी सामग्री देखी जो गलत या भ्रामक थी। 37 ने इस बात से इंकार कर दिया और 19 को इस बारे में पता ही नहीं है। (चित्र.14 का विवरण)

चित्र 15

चित्र 15 गलत या भ्रामक जानकारी

यही कारण है कि 46 बच्चे ने कहा कि शायद ऐसी सामग्री से डर, भ्रम या गलत समझ पैदा हो सकती है। लेकिन 35 बच्चों का साफ तौर पर कहना था कि हां ऐसा हो सकता है वहीं 19 ने इसका जवाब नहीं में दिया।(चित्र.15 का विवरण)

चित्र 16

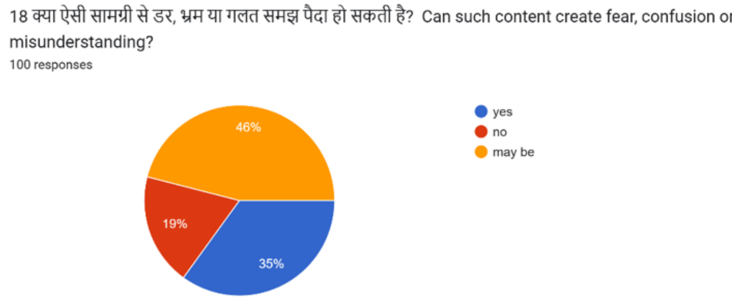

चित्र 16 समझ का स्तर

52 बच्चे के अनुसार यौन शिक्षा के विषय में सही जानकारी मिलने में सबसे बड़ी बाधा सामाजिक झिझक है। 23 बच्चे इस बात की ओर इशारा करते हैं कि स्कूल में पढ़ाई का अभाव इस विषय के लिए बाधा है। 11 का कहना है कि परिवार का विरोध और 14 ने बताया कि सही डिजिटल सामग्री का न होना बड़ी बाधा है।(चित्र.16 का विवरण)

चित्र.17

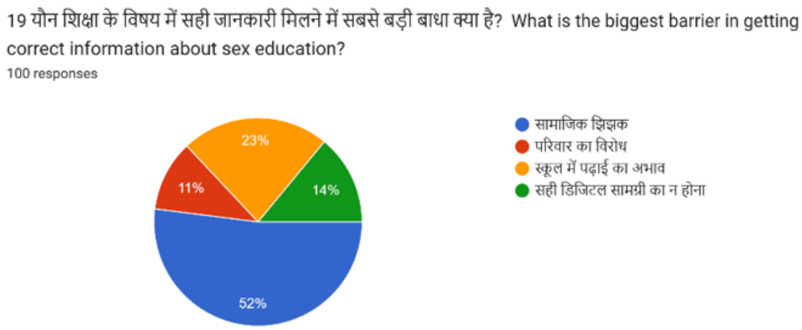

चित्र 17 जानकारी में बाधा

क्या लड़कियों और लड़कों को यौन शिक्षा की समान जानकारी मिलती है? इसके जवाब में 38 पक्ष में और 15 विपक्ष में खड़े नजर आए लेकिन 38 को इस बात का उत्तर नहीं पता था।(चित्र.17 का विवरण)

चित्र 18

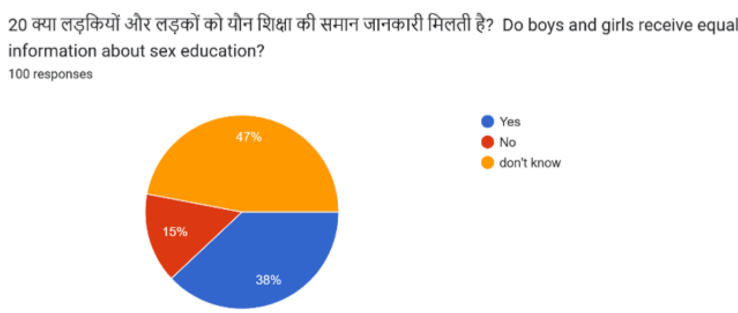

चित्र 18 समान शिक्षा का अवसर

81 बच्चे ने कहा कि डिजिटल मीडिया पर सही और सुरक्षित यौन शिक्षा की सामग्री बढ़ाई जानी चाहिए जबकि 19 ने इसका विरोध प्रकट किया।(चित्र.18 का विवरण)

चित्र 19

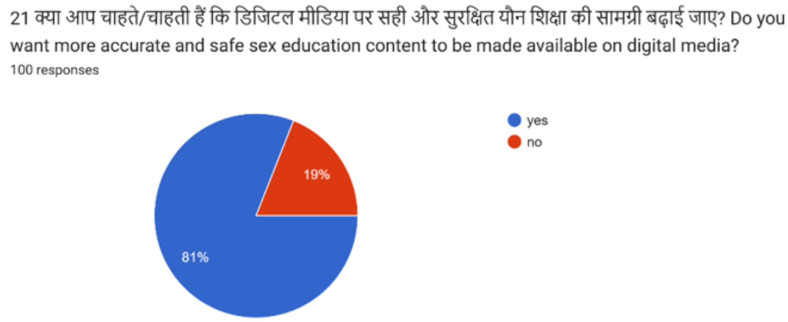

चित्र 19 सुरक्षित यौन शिक्षा का स्तर

शोध परिकल्पना परीक्षण एवं निर्णय

शोध परिकल्पना एच0- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के बीच दृष्टिकोण निर्माण में कोई संबंध नहीं है।

एच1- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के बीच दृष्टिकोण निर्माण में संबंध है। को जांचने के लिए मुख्य रूप से पियरसन का टू टेल टेस्ट अपनाया गया। जिसमें स्वतंत्र चर- डिजिटल मीडिया का यौन शिक्षा की समझ पर प्रभाव तथा आश्रित चर- छात्रों का दृष्टिकोण निर्धारित किए गए थे।

सार्थकता स्तर (Level of significance) (α) 5% =0.05 पर रखा गया था। इसके परिणाम में पाया गया कि डिजिटल मीडिया की समझ पर प्रभाव और यौन शिक्षा के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण के बीच अत्यंत कमजोर किंतु सकारात्मक सहसंबंध है। जिसकी गणना के रूप में r = 0.118 जोकि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। p वल्यू भी 0.241 प्राप्त हुई है जोकि 0.05 से अधिक है। अत: इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया है कि शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया गया तथा वैकल्पिक परिकल्पना को अस्वीकृत किया गया है।

चित्र 20

Correlations

		effect of digital media on understanding sexual education	digital media influences my thinking about sexual education
effect of digital media on understanding of sexual education	Pearson Correlation	1	.118
	Sig. (2-tailed)		.241
	N	100	100
digital media influences my thinking about sexual education	Pearson Correlation	.118	1
	Sig. (2-tailed)	.241	
	N	100	100

चित्र 20 शोध परिकल्पना परीक्षण परिणाम

चित्र 21

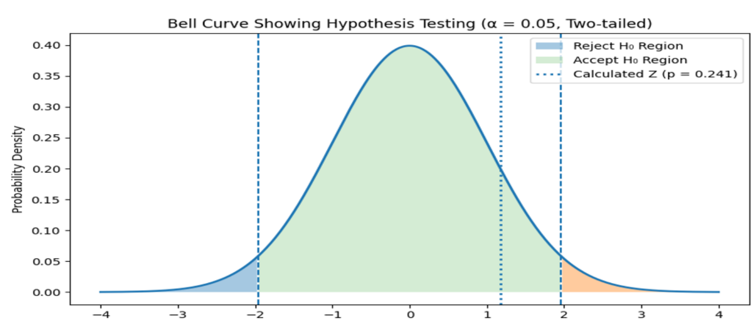

चित्र 21 शोध परिकल्पना परीक्षण परिणाम के आधार पर *H*0 की अस्वीकृति

उपरोक्त चित्र.20 में 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर (Level of significance) पर सामान्य विवरण बैल कर्व अर्थाथ वक्र को दर्शाया गया है। चित्र के दोनों छोर पर शून्य परिकल्पना के अस्वीकृति क्षेत्र को प्रदर्शित किया गया है, जबकि इसका मध्य भाग को स्वीकृति क्षेत्र को दर्शाता है। प्राप्त पी-वल्यू (0.241) जिसे हम अंग्रेजी में calculated value Z (p= 0.241) से दर्शाते हैं वह स्वीकृति क्षेत्र में पाई गई है, जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार और वैकल्पिक परिकल्पना को अस्वीकृत किया गया है।

चित्र 22

Correlations

		time spent daily on digital media	Most used digital media plateform
time spent daily on digital media	Pearson Correlation	1	.088
	Sig. (2-tailed)		.385
	N	100	100
Most used digital media plateform	Pearson Correlation	.088	1
	Sig. (2-tailed)	.385	
	N	100	100

चित्र 22 रोजाना डिजिटल मीडिया पर बिताया गया समय एवं सबसे अधिक डिजिटल माध्यम का प्रयोग के बीच का सह-संबंध परिणाम, शोध उद्देश्य क्रम स. 01 हेतु)

शोध उद्देश्य 01- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया की आदतों का अध्ययन करना। छात्रों द्वारा रोजाना डिजिटल मीडिया पर बिताया गया समय और सबसे अधिक डिजिटल माध्यम के प्रयोग के बीच बहुत ही कमजोर सकारात्मक संबंध है (r = 0.088)। ऐसा इसलिए हैं क्योंकि सांख्यिकीय सार्थकता (Statistical Significance) p=0.358 और α = 0.05 है जोकि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। अत: कहा जा सकता है कि छात्रों के द्वारा डिजिटल मीडिया उपयोग करने की अवधि उनके द्वारा प्रयोग किए जा रहे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करती है।

सह-संबंध देखने के लिए चर (Variables)

रोजाना डिजिटल मीडिया पर बिताया गया समय

सबसे अधिक डिजिटल माध्यम का प्रयोग

चित्र 23

Correlations

		comfort level in talking about sexual education	main source of sexcual education information
comfort level in talking about sexual education	Pearson Correlation	1	-.097
	Sig. (2-tailed)		.339
	N	100	100
main source of sexcual education information	Pearson Correlation	-.097	1
	Sig. (2-tailed)	.339	
	N	100	100

चित्र 23 यौन शिक्षा के विषय पर बात करने में सहजता का स्तर एवं यौन शिक्षा की जानकारी प्राप्त करने का प्रमुख माध्यम, के बीच सह-संबंध का परिणाम, शोध उद्देश्य क्रम स.02 हेतु

शोध उद्देश्य 02- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच यौन शिक्षा के प्रति विद्यमान दृष्टिकोण एवं धारणाओं का अध्ययन करना।

सह-संबंध देखने के लिए चर (Variables)

1) यौन शिक्षा के विषय पर बात करने में सहजता का स्तर
2) यौन शिक्षा की जानकारी प्राप्त करने का प्रमुख माध्यम

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच यौन शिक्षा के प्रति विद्यमान दृष्टिकोण एवं धारणाओं का अध्ययन करने पर यह परिणाम सामने आया है कि यौन शिक्षा पर छात्रों के द्वारा बातचीत करने के आत्मविश्वास और यौन शिक्षा से जुड़ी हुई जानकारी के मुख्य स्त्रोत के बीच बेहद ही कमजोर एवं नकारात्मक सहसंबंध है ($r= -0.097$), यह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं हैं ($p=0.339>0.05$)। यह इस बात की ओर इशारा करता है कि छात्रों का यौन शिक्षा पर चर्चा करने का जो दृष्टिकोण है वह उनके सूचना स्त्रोतों से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं होता है। शोध उद्देश्य 03. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के द्वारा डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण के बीच संबंध का विश्लेषण करना।

सह-संबंध देखने के लिए चर (Variables)

1) यौन शिक्षा से संबंधित ऑनलाइन कंटेंट देखना
2) यौन शिक्षा से संबंधित ऑनलाइन कंटेंट देखना के बाद मन में आना वाला भाव
3) डिजिटल मीडिया का छात्रों की सोच और दृष्टिकोण पर यौन शिक्षा के विषय में पड़ने वाला प्रभाव।

Correlation is significant at the 0.05 level (2-tailed).

चित्र 24

Correlations

		seen sexual health related content online	feling after viewing sexual education content online	digital media influences my thinking about sexual education
seen sexual health related related content online	Pearson Correlation	1	-.201*	.163
	Sig. (2-tailed)		.045	.105
	N	100	100	100
feling after viewing sexual education content online	Pearson Correlation	-.201*	1	-.184
	Sig. (2-tailed)	.045		.067
	N	100	100	100
digital media influences my thinking about sexual education	Pearson Correlation	.163	-.184	1
	Sig. (2-tailed)	.105	.067	
	N	100	100	100

चित्र 24 यौन शिक्षा से संबंधित ऑनलाइन कंटेंट देखने एवं यौन शिक्षा से संबंधित ऑनलाइन कंटेंट देखना के बाद मन में आना वाला भाव एवं डिजिटल मीडिया का छात्रों की सोच और दृष्टिकोण पर यौन शिक्षा के विषय में पड़ने वाले प्रभाव का बीच सह-संबंध परीक्षण परिणाम, शोध उद्देश्य क्रम स. 03 हेतु

इसके पहले भाग में छात्रों द्वारा डिजिटल मीडिया पर कंटेंट को देखने और उसके बाद होने वाली भावनाओं में कमजोर नकारात्मक संबंध देखने को मिलता है। यहाँ पर $r= -0201$ जबकि $p=0.045<0.05$ प्राप्त हुआ है।

दूसरे भाग में छात्रों द्वारा डिजिटल मीडिया पर कंटेंट को देखने और उससे प्रभावित होने के बीच में भी संबंध नहीं मिलता है। यहाँ पर परिणामों में $r= 0.163$ जबकि $p=0.105<0.05$ प्राप्त हुआ है।

इसके तीसरे भाग में कंटेंट देखने के बाद होने वाली भावनाओं और डिजिटल मीडिया पर कंटेंट को देख कर उससे प्रभावित होने वाली सोच के बीच में भी कोई संबंध प्राप्त नहीं हुआ है। यहाँ पर $r= -0.184$ जबकि $p=0.067<0.05$ प्राप्त हुआ है।

शोध उद्देश्य 04. डिजिटल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री का छात्रों के शिक्षा की समझ और यौन अधिकारों पर पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना।

चित्र 25

Correlations

		benefit gained from digityal media related to sexual education	exposusre to misleading sexual content
benefit gained from digityal media related to sexual education	Pearson Correlation	1	-.101
	Sig. (2-tailed)		.320
	N	100	100
exposusre to misleading sexual content	Pearson Correlation	-.101	1
	Sig. (2-tailed)	.320	
	N	100	100

चित्र 25 डिजिटल मीडिया से यौन शिक्षा संबंधित प्राप्त होने वाले लाभ एवं डिजिटल मीडिया पर गलत या भ्रामक सामग्री से संपर्क के बीच सह-संबंध परीक्षण परिणाम, शोध उद्देश्य क्रम स.4 हेतु।)

सह-संबंध देखने के लिए चर (Variables)

1) डिजिटल मीडिया से यौन शिक्षा संबंधित प्राप्त होने वाला लाभ।
2) डिजिटल मीडिया पर गलत या भ्रामक सामग्री से संपर्क होना।

यह परिणाम इस ओर इशारा करते हैं कि डिजिटल मीडिया के द्वारा यौन शिक्षा से संबंधित प्राप्त होने वाला लाभ तथा भ्रामक यौन सामग्री के बीच बेहद की कमजोर नकारात्मक संबंध है (r= -0.101) जबकि p=0.320<0.05 है जो कि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इन आंकड़ों से यह स्थिति स्पष्ट होती है कि छात्रों को डिजिटल मीडिया से प्राप्त होने वाला शैक्षिक लाभ छात्र-छात्राओं को भ्रामक सामग्री से प्रभावित अथवा महत्वपूर्ण रूप से सुरक्षित नहीं रखता है।

14. निष्कर्ष एवं सिफारिशें

छात्रों द्वारा सबसे अधिक डिजिटल मीडिया (सोशल मीडिया) का प्रयोग पढ़ाई/जानकारी के लिए, मनोरंजन के लिए, दोस्तों से बात करने के लिए करते हैं लेकिन यौन शिक्षा से संबंधित बातों के लिए उनका यह प्रमुख माध्यम नहीं है। स्कूल प्रांगण के साथ-साथ सामाजिक माहौल यौन शिक्षा पर बात करने के लिए पूरी तरह से 21वीं सदी के विकासशील भारत में अभी भी पूरी तरह से सहजता के लिए जगह नहीं है। जहां पर खुल कर इस विषय पर आने वाली पीढ़ी को बताया जाया सकें। यौन शिक्षा से संबंधित बातों के लिए आज भी इस आधुनिक सोच वाले भारत में बच्चे स्कूलों की ओर इस आशा से देखते हैं कि उन्हें सही और सटीक जानकारी प्रदान की जाएगी। यही कारण है कि आज का युवा इंटरनेट पर अपनी यौन शिक्षा की जिज्ञासा को सही और गलत दोनों रूप में बगैर उसकी छानबीन किए पूरी करने के लिए मजबूर है। जिसके चलते न तो छात्रों की समझ पर इसका कोई खास प्रभाव दिखाई पड़ता है ना ही उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करता है और ना ही किसी प्रभाव के भाव में की बदलाव महसूस होता है। ऐसी जानकारी उनके मन में डर और भ्रम पैदा कर रही है। यही कारण है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की डिजिटल मीडिया के प्रति धारणा और यौन शिक्षा के बीच दृष्टिकोण में किसी तरह का कोई संबंध नहीं है।

15. सिफारिशें

शोध कर्ता के रुप में यह समस्या को अधिकतम या फिर जड़ से खत्म करने के लिए अलग-अलग स्तर पर कार्य किए जा सकते हैं जो निम्नवत है-

1) सर्वप्रथम माध्यमिक विद्यालयों में यौन शिक्षा जैसे गंभीर एवं नाजुक विषय के लिए अलग से पाठ्य क्रम तैयार करना चाहिए।
2) यौन शिक्षा के लिए उसके विषय विशेषज्ञ को बुलाकर छात्रों को नियमित रूप से कक्षाएं देनी चाहिए।
3) आज के डिजिटल इंडिया मुहिम को ध्यान में रखते हुए स्कूलों में भी यौन शिक्षा से जुड़े विषयों को बगैर किसी झिझक के साथ पढ़ाना चाहिए।
4) सामाजिक स्तर पर यौन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जमीनी स्तर पर वहां की आम भाषा में प्रचार-प्रसार नियमित रूप से करना चाहिए।
5) समाज में ऐसा माहौल तैयार करना चाहिए जिससे इस विषय में बात करते वक्त कोई झिझक ना महसूस हो।
6) सरकार और समाज दोनों को मिलकर इस पर खुल बातें करनी चाहिए और जमीनी स्तर पर कार्य करना चाहिए।

इस आधार पर एक मॉडल प्रस्तुत किया जा सकता है जो छात्र सहभागिता केंद्रित प्रणाली पर होगा।

जिसे “डिजिटल मीडिया समर्थित समावेशी यौन शिक्षा समावेशी मॉडल” कहा जा सकता है। जिसे अंग्रेजी में “Digital Media Inclusive Sexual Education Integrated Model”(DMISEI model) कहा जाएगा।

यौन शिक्षा सरकारी नीति स्तर

- इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर यौन शिक्षा से संबंधित सभी नीतियों को मजबूती प्रदान करना एवं नई प्रभावी नीतियों का निर्माण करना।
- सभी विद्यालयों में यौन शिक्षा पाठ्यक्रम को अनिवार्य एवं मुख्य विषय के रूप में शामिल जाए।
- डिजिटल इंडिया मुहिम के तहत डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सिर्फ प्रशिक्षित विषय विशेषज्ञों द्वारा सामग्री को विकसित किया जाए।
- समावेशी शिक्षा के साथ-साथ लैंगिक समानता दृष्टिकोण को मजबूती के साथ शामिल किया जाए।

शिक्षा प्रणाली

- विद्यालय स्तर पर सिर्फ विशिष्ट प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा यौन शिक्षा दी जाए।
- हर विद्यालय में कम से कम एक एवं बच्चों की संख्या के अनुसार परामर्श केंद्र स्थापित किए जाए।
- जीवन कौशल आधारित शिक्षा प्रदान की जाए।

डिजिटल मीडिया

- सिर्फ सरकार द्वारा प्रमाणित ऐप, ई-कंटेंट एवं वेबसाइट स्कूली बच्चों को ध्यान में रख कर बनाई जाए।
- भ्रामक, गलत एवं दिशाहीन जानकारी पर नियंत्रण केंद्र की स्थापना की जाए।
- सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर के साथ-साथ स्कूली स्तर पर विशेष साक्षरता कार्यक्रम, क्षेत्रीय भाषा में नियमित रूप से चलाए जाए।
- बच्चों के बीच सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स का सकारात्मक प्रयोग किया जाए।

सामाजिक एवं परिवार सहयोग स्तर

- लैंगिक समानता पर हर स्तर पर सामुदायिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाए।
- सामाजिक चौपाल संवाद कार्यशालाएं चलाई जाए।
- झिझक को हटाने हेतु विशेष कार्यक्रम विभिन्न माध्यमों पर अनिवार्य रूप से प्रसारित किए जाए।

छात्र व्यवहार एवं दृष्टिकोण

- डिजिटल इंटरैक्टिव सेशन चलाए जाए।
- छात्र केंद्रित नेतृत्व सहभागिता कार्यक्रम नियमित अवधि रूप से कराए जाए।
- छात्र-समाज और छात्र-परिवार संवाद गोष्ठी का आयोजन कराया जाए।
- सुरक्षित एवं सहजता प्रदान करने वाले चर्चा मंच स्थापित किए जाए।

इसका प्रारूप कुछ इस प्रकार का होगा- DMISEI model

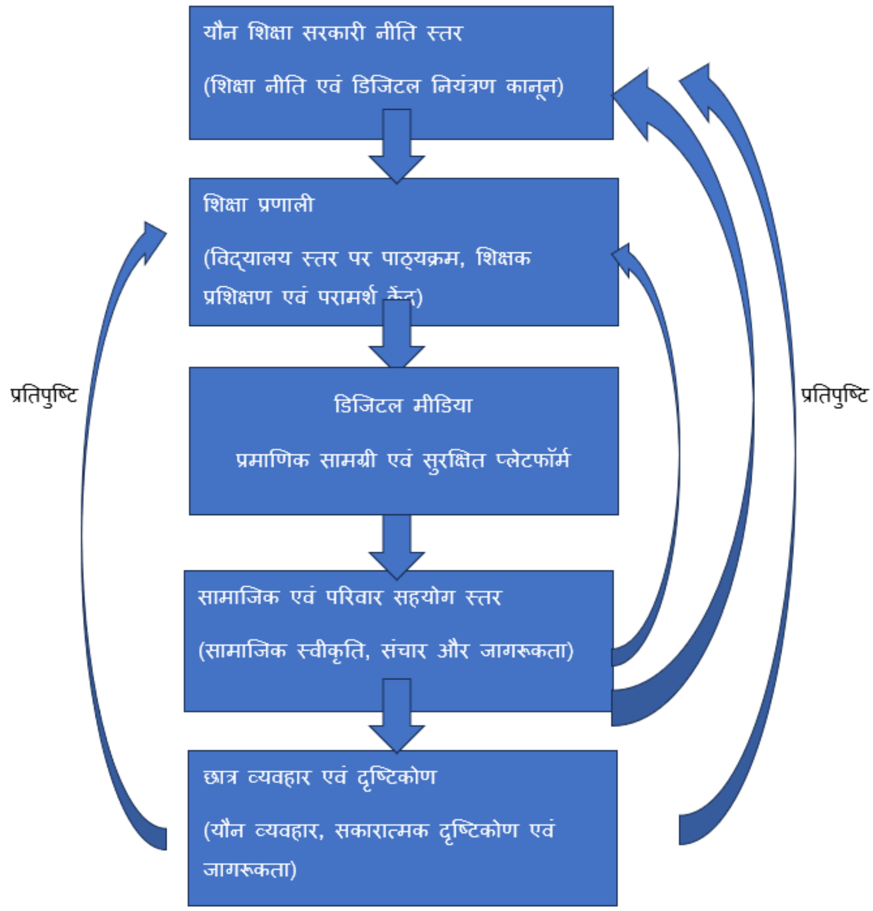

REFERENCES

Aggarwal, J. (2017). FOUNDATION OF EDUCATION. Educational Philosophy, 3-23. (K. C. Kapoor, Ed.) Noida, uttar pradesh, india: VIKAS PUBLISHING HOUSE PVT LTD. Retrieved november 14, 2024, from https://rgu.ac.in/wp-content/uploads/2021/02/Download_625.pdf

et.all, A. E. (2018). The role of social media in sex education: Dispatches from queer, trans, and racialized communities. Feminism & Psychology, 28(1), 152-170. Retrieved 2025, from https://journals.sagepub.com/doi/epub/10.1177/0959353517717751

jagadish, B. (2013). A study on the knowledge and attitude of parents teachers and students on sex education in secondary schools in Karnataka. Karnataka: shodhganga inflibnet. Retrieved november 11, 2024, from https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/74863/9/chapter%205.pdf

Lynae M Brayboy 1, A. S.-M. (2017). Girl Talk: A Smartphone Application to Teach Sexual Health Education to Adolescent Girls. national library of medicine. doi:10.1016/j.jpag.2016.06.011

mahto, s. k. (2021). बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा के तथ्यों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 18(5), 252-258. Retrieved november 11, 2024, from file:///C:/Users/tarun%20kumar/Downloads/363716_47089605.pdf

sebastian, j. (2000). Sex education in schools A study on the attitude of parents teachers and students. Shivaji University, Department of Social Work. kolhapur: shodhganga. Retrieved november 11, 2024, from https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/140514/16/16_finding%20and%20conclusion.pdf

unesco. (2021). The journey towards comprehensive sexuality education: global status report. unesco. doi:https://doi.org/10.54675/NFEK1277

Wynn, E. G. (2016). Use of social media for sexual health promotion: a scoping review. Global Health Action, 1-18. doi:10.3402/gha.v9.32193

Zai Divecha, A. D. (2012). Tweeting About Testing: Do Low-Income, Parenting Adolescents And Young Adults Use New Media Technologies To Communicate About Sexual Health? national library of medicine. doi: 10.1363/4417612

शर्मा, अ. (2022). Role of Mass Media Tools to Educate School Children about Child Sexual Abuse A Study of Students in Chandigarh. RIMT University, SCHOOL OF MASS COMMUNICATION & MEDIA TECHNOLOGY. Chandigarh: shodhganga. Retrieved november 11, 2024, from https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/394683/10/chapter-v.pdf

MHRD, M. (2020). www.education.gov.in. Retrieved november 14, 2024, from minisitry of education: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

VivekaVani. (2011, aug 11). vivekavani.com. Retrieved nov 14, 2024, from vivekavani: https://vivekavani.com/what-we-believe-vivekananda/

Gandhi, M. (1937, july 31). harijan. education, 5. (M. Gandhi, Ed.) india. Retrieved november 14, 2024, from https://archive.org/details/HindSwaraj.Harijan.vol5/page/n195/mode/2up

Sikarwar, R. (2016, december 29). www.linkedin.com. Retrieved november 14, 2024, from linkedin: https://www.linkedin.com/pulse/definition-digital-media-rahul-sikarwar-digital-marketing-expert/

Mondal, S. C. (2018, aug 3). GLIMPSES OF DR. B.R. AMBEDKAR'S VISION ON EDUCATION. International Journal of Creative Research Thoughts, 6(3), 17-23. Retrieved nov 14, 2024, from https://ijcrt.org/papers/IJCRT1135005.pdf

Indira, R. (2018, nov 14). Education and Society. Education and Society. (R. Indira, Ed.) Retrieved 11 14, 2024, from https://ebooks.inflibnet.ac.in/socp13/

maryville. (2020, march 20). online.maryville.edu. Retrieved from maryville.edu: https://online.maryville.edu/blog/what-is-digital-media/

eduhutch. (2021, july 6). eduhutch.blogspot.com. Retrieved from eduhutch: https://eduhutch.blogspot.com/2021/07/definition-of-education.html

Sridevi, S. (2022, may). Rabindranath Tagore's Philosophy on Indian Education. International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology, 2(2), 33-35. Retrieved november 14, 2024, from https://ijarsct.co.in/Paper3611.pdf

john o odo, m. o. (2023, april). perception of sex education by students and teachers in secondary school in nsukka local government area, enugu state. nsukka, enugu, nigeria. Retrieved november 2024, from https://www.researchgate.net/publication/370057591_Perception_of_Sex_Education_by_Students_and_Teachers_in_Secondary_Schools_in_Nsukka_Local_Government_Area_Enugu_State

CIHR. (2023, may 08). cihr-irsc.gc.ca. Retrieved from candian institute of hea;th research : https://cihr-irsc.gc.ca/e/48642.html

Aman Verma, D. R. (2023, july). www.researchgate.net. Retrieved november 14, 2024, from researchgate: https://www.researchgate.net/publication/372418302_Education_Meaning_definition_Types

jaygala. (2024, nov 7). www.geeksforgeeks.org. Retrieved from geeksforgeeks: https://www.geeksforgeeks.org/history-of-internet/

Association, A. P. (2024, november 14). www.apa.org. Retrieved from American Psychological Association : https://www.apa.org/topics/sex-sexuality

Dwivedi, S. (2024, nov 14). www.egyankosh.ac.in. Retrieved from gyankosh: https://www.egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/68583/1/Unit-9.pdf

SERC. (2024, november 14). serc.mb.ca. Retrieved from sexuality education resourse center : https://serc.mb.ca/sexual-health-info/the-basics/what-is-sex/

WHO. (2024, november 14). www.who.int. Retrieved from world health orginasation : https://www.who.int/health-topics/sexual-health#tab=tab_2

wikipedia. (2024, november 14). en.wikipedia.org. Retrieved from wikipedia: https://shorturl.at/jr834

wikipedia. (2024, november 14). en.wikipedia.org. Retrieved from wikipedia: https://en.wikipedia.org/wiki/TIFRAC#:~:text=A%20British%2Dbuilt%20HEC%202M,the%20first%20computer%20in%20India.